

प्रश्न-पेपर 37

ता. 16-3-84

'हैम सं. ज्वोरीका मध्यमा' पाठ १ थी 15

मार्क्स 60

प्र. १ नीचेना मटे शब्दों तथा धातुओं पूर्ण माहिती साथे आपो, गमे ते 10 7½ मार्क्स

(१) जोषुं (इश विना) (२) वधुं (अविना) (३) सगुं (४) सधलुं (सर्व विना) १०

(५) मेघ - २३ (६) सेवा करनार - २६ (७) अभ्यन्तर - ५१ (८) हांकुं - १५, ५२

(९) चलित थुं - ५३ (१०) धर्म करवो - ५० (११) चरित - ५७ (१२) फाडेलुं - ७३

प्र. २ (अ) नीचेनाना मांग्या प्रमाणे कर्तरि रूपो लखौ। गमे ते ५ 7½ मार्क्स

(१) प्रति + अय - ५ काल उ.पु. (२) निस् + ई - ह. वि. २ उ.पु.

(३) परि + उद् + श्रु - व. आ. उ.पु. (५) निर + पुष् - व. आ. २ पु.

(५) दुर् + तृद् - विध्य. विना उ.काल एक व. व. व. (६) उद् + निस् + वश - ५ काल २ पु.

(ब) नीचेना धातुओना जणाव्या प्रमाणे कर्मणि रूपो लखौ, गमे ते ५ 7½ मार्क्स

(१) निस् + दरिद्रा - १-उ.पु. व. वि. (२) वि + स्मि - ह. आ. २-उ.पु.

(३) उद् + शृ - व. वि. १ पु. (५) निस् + स्तृ - ह. आ. १-उ.पु.

(५) सम् + ष्वि - ५ काल एक व. (६) सम् + गुप् - ५ काल उ.पु.

(क) नीचेना कृदन्तोनां रूपो लखौ। गमे ते त्रण 6 मार्क्स

(१) उद् + शौ - कर्मणि व. कृ. स्त्री. पुं. एकवचन

(२) प्रति + उद् + ह्वे - कर्तरि-कर्मणि व. कृ. नपुं. २-७

(३) उद् + लू - कर्तरि - स्त्री. एक व., पुं. व. व. नपुं. संबोधन

(५) उन्मु + ऋ (उ गण) - कर्तरि - कर्मणि - त्रणे लिङ्ग १-७

प्र. ३ नीचेना रूपोनी साधनिका करी अर्थ लखौ। गमे ते त्रण 7½ मार्क्स

(१) आवसीतया (२) अन्ववोशति (३) आशीष्यमाणौ (४) मागण विना

(५) उत्पन्नवै:

प्र. ५ (अ) नीचेना वाक्योनुं ससान्धि संस्कृत लखौ। गमे ते - ३ 7½ मार्क्स

(१) साफ कराता वासणोने सारी रीते जोतां अने श्वाटला ऊपर बेसतां (आधी + आस)

एवा उपाय पूज्य वैडे पैला बालकोने सारी रीते व्याकरणना प्रश्नो पूछाय

(२) गुरुनी आज्ञानै हेयामां धारण करतां (धा) अने परमात्मानी वाणीनुं श्रवण करतां अने

पछी आत्माने पवित्र करतां आ मित्रो स्वरेस्वर सामान्य न हतां।

(३) पिताजी वैडे अपाता एवा (दा) वस्त्रोनें पहरेतां (वस्त्र) अने वात्सल्यवाला एवा पुत्रोए

सूर्य उदय पाग्ये छते गुरु वैडे वस्त्राणातां एवा शाश्वत् (शाश्वत् विना) तीर्थमां प्रवेश कर्यो।

(५) विह्वल अने वीकण एवा आ नौकरोए गायो दौहवाते छते उदासीन रहीने

जोरवमपूर्वक स्वामीना कार्यो कर्या।

(ब) नीचेना वाक्योने सन्धिमुक्त करी अर्थ लखी

7½ मार्क्स

(१) गुरु अद्याध्यया अहमध्ययनं व्याकरणस्येत्यपृच्छ्यताचार्यः ।

(२) ओन्नोद्यमानर्षिरेतित्वौच्यताधीयान शिष्यस्त्वस्मिदित्यतस्तत्राय ।

(३) आगांसीवानार्त्तस्यागांसीसित्वेशोनाम्भोध्यम्भस्याप्यतानागसः ।

प्र. ५ (अ) संस्कृतना सुंदर अभ्यास मीट अभ्यासकौर शुं शुं करवुं जीस्यै ?

ते 6-7 लीटीमां संस्कृतमां लखी

5 मार्क्स

(ब) नीचे जणावेल नियमो उदाहरण पूर्वक लखी । वमे ते-5

5 मार्क्स

(1) 15/9 (2) 14/13 (3) 13/6 (4) 7/8

(5) 3/8 (6) 9/93

जवाब :- प्र. 3 (१) आ + अव + स्तो - स्त्री. लृ. ए. व.

(२) अनु + अव + वश - सप्त. ए. व. (३) न थाय (४) प्रति + अनु + विद् - छ. ३. ए. व.

प्र. ५ (ब)

(१) हे गुरो! अद्य अहम् व्याकरणस्य अध्ययनं अद्ययै इति आचार्यः अपृच्छ्यत ।

(२) ओम्, नोद्यमानर्षिः ऐत, इत्वा अधीयानारीष्यः औच्यत त्वं स्मिदिति अतः तत्र अय ।

अर्थ - हा, प्रेरणा कराता त्हाषि ग्या, जसने भणतो एवो शिष्य कहेवायो के (इ. १३. भा. ले.)

तुं जल्दीपी अहीथी त्यां जा ।

(३) अनागसः आगांसी इव अनार्त्तस्य आगांसी इति त्वा ईशेन अम्भोध्यम्भसी आप्यत

अर्थ - निरपराधीमोना अपराधोनी जेम अपीडीतता पापोने जीसने स्वामी वडे

समुद्रना पाणीमां जवायुं ।